रीढ़धारी भी होते हैं परजीवी

सजीवों के बीच उपस्थित पेचीदा सम्बंधों में से एक है परजीविता। इसमें एक जीव किसी दूसरे जीव पर निर्भर होता है। यह निर्भरता मात्र आवास के लिए हो सकती है या पोषण व अन्य चीज़ों के लिए भी हो सकती है। कभी-कभी यह सम्बंध एक जीव (परजीवी) के लिए लाभप्रद होता है मगर पोषक (मेजबान) के लिए हानिप्रद नहीं होता। कभी-कभी प्राणलेवा की हद तक हानिप्रद भी हो सकता है। परजीवी-मेजबान सम्बंधों में एक बात प्रायः देखी जाती है कि जैव विकास की दृष्टि से कम विकसित जीव किसी तथाकथित अधिक विकसित जीव पर परजीवी होता है। इस लिहाज़ से देखें तो रीढ़धारी जंतु रीढ़रहित जंतुओं से अधिक विकसित हैं और अपेक्षा यही होती है कि रीढ़धारी जंतु ही मेजबान की भूमिका निभाएंगे, जबकि रीढ़रहित जंतु परजीवी के रूप में रहेगा। जैसे कृमि, मलेरिया परजीवी वगैरह मनुष्य में परजीवी होते हैं। यह सुनना शायद अजीब लगेगा कि मनुष्य किसी छोटे जीव में परजीवी हो जाए। मगर मछलियों का एक कुल है जिसमें कई प्रजातियां रीढ़हीन जंतुओं में परजीवी के तौर पर रहती हैं।

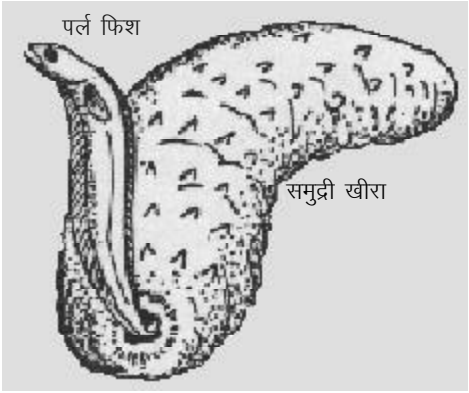

मछलियों के इस कुल का नाम केरेपिडी है और इसमें कई मछली प्रजातियां ऐसी हैं जो समुद्री खीरा (सी कुकंबर) और स्टार फिश जैसे रीढ़विहीन जीवों में परजीवी के रूप में रहती हैं। इन मछलियों को आम अंग्रेज़ी में पर्ल फिश कहते हैं। पर्ल फिश यानी मोतिया मछली का यह नाम इसलिए पड़ा है क्योंकि इनकी खोज एक सीपी के अंदर की गई थी।

समुद्री खीरा नाम से भी ऐसा लगता है कि यह कोई वनस्पति होगी। मगर यह एक जीव है जिसे उसके आकार के कारण खीरा कहा जाता है। इसी प्रकार से स्टार फिश वास्तव में मछली नहीं होती मगर स्टार यानी सितारे जैसी ज़रूर दिखती है। समुद्री खीरा और स्टार फिश जीव जगत के मोलस्का व इकानोडर्मेटा समूह के सदस्य हैं।

पर्लफिश की अलग-अलग प्रजातियां अलग-अलग स्तर की परजीविता दर्शाती हैं। जैसे कुछ पर्लफिश ऐसी होती हैं जो किसी समुद्री खीरे के गुदा में से उसकी आंत में प्रवेश कर जाती हैं। काफी समय वे वहीं बिताती हैं मगर समय-समय पर बाहर आकर छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़ों का शिकार करके उदर पूर्ति करती हैं। मगर कुछ अन्य प्रजातियां ऐसी भी हैं जो बाहर निकलकर शिकार करने की जेहमत भी नहीं उठातीं। वे समुद्री खीरा को अंदर-अंदर चट करती रहती हैं। खास तौर से वे अपने पोषक के जननांग की दावत उड़ाती रहती हैं।

मगर अधिकांश पर्लफिश समुद्री खीरा के श्वसन तंत्र (गलफड़ों) में बस जाती हैं। वहां ये गलफड़ों के टुकड़े काट-काटकर अपना पेट भरती रहती हैं। वैसे एक रोचक बात यह देखी गई है कि जब ये मछलियां समुद्री खीरे के शरीर में प्रवेश करती हैं, तो इनके शरीर में व्यापक परिवर्तन होते हैं। इनकी लंबाई 60 प्रतिशत तक घट जाती है।

परजीवी पर्लफिश काफी छोटी-छोटी होती हैं - प्रायः इनकी लंबाई 10-15 से.मी. होती है। अक्सर एक मेजबान के अंदर एक ही मछली रहती है मगर कई शोधकर्ताओं ने एक ही मेजबान के शरीर में एक से अधिक मछलियां भी देखी हैं। खास तौर से एक ही मेजबान में एक ही प्रजाति की एक मादा और एक नर मछली पाई जाती है। इस आधार पर एक अनुमान है कि समुद्री खीरा भोजन उपलब्ध कराने के अलावा संतानोत्पत्ति के लिए सुरक्षित जगह भी उपलब्ध कराता है। ***(स्रोत फीचर्स)***